

अंतरिक्ष योद्धा सुनीता विलियम्स युवा विद्यार्थियों के लिए एक प्रेरक व्यक्तित्व

विज्ञान प्रगति
नवम्बर 2024

निदेशक

डॉ. रंजना अग्रवाल

सम्पादक

डॉ. मनीष मोहन गोरे

सह सम्पादक

शुभदा कपिल

प्रोडक्शन

अश्वनी कुमार ब्राह्मी

अरुण अनियाल

मो० शकील अहमद

लेआउट डिज़ाइन एवं आवरण

अभिनव राज

बिक्री एवं वितरण

नीलू श्रीवास्तव



आदिकाल से अंतरिक्ष ने मनुष्य को आकर्षित और रोमांचित किया है। आगे चलकर विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में मनुष्य ने क्रमशः प्रगति की। आकाश को निहारकर अचरज में पड़ने वाला मनुष्य आज अंतरिक्ष में विचरण करने में सक्षम हो गया है। इसके मूल में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का संबल है।

प्रौद्योगिकी में कई बार परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन या समायोजन ना किए जाने पर उसके द्वारा अनुकूल परिणाम नहीं मिलते और कभी-कभी प्रौद्योगिकी अत्यंत घातक भी साबित हो जाती है। कल्पना चावला की अंतरिक्ष वापसी के दौरान हुआ हादसा और उनका आकस्मिक निधन ऐसी ही एक प्रौद्योगिकी विफलता का उदाहरण है। गनीमत है नासा ने सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर की वापसी में दूरदर्शिता का परिचय दिया। उनके अंतरिक्षयान में तकनीकी खामियां आ गई थीं इसलिए नासा ने उस यान से उन दोनों की पृथ्वी वापसी की योजना को रद्द कर दिया। हालांकि इसकी वजह से उन्हें अब करीब 8 महीने अंतर्राष्ट्रीय स्पेस स्टेशन में ठहरना पड़ेगा, और फरवरी 2025 में क्रू-9 अंतरिक्षयान से वे सकुशल पृथ्वी पर लौट सकेंगे।

अब भारतीय मूल की मेधावी अंतरिक्ष विज्ञानी और अनुभवी अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स की बात करते हैं। 5 जून 2024 को सुनीता विलियम्स अपने सह-यात्री बुच विल्मोर के साथ अंतर्राष्ट्रीय स्पेस स्टेशन पहुंचीं। उनका वहां पर अनुसंधान कार्य महज 8 दिनों का था और उसके बाद उसी अंतरिक्षयान से उन दोनों को पृथ्वी पर वापस आना था। लेकिन वर्तमान परिस्थिति में अब वे फरवरी 2025 में पृथ्वी पर लौटेंगे।

अंतरिक्ष प्रवास बेहद चुनौतीपूर्ण होता है। अंतरिक्ष में भेजे जाने से पहले अंतरिक्षयात्रियों को कठोर प्रशिक्षण से गुजारा जाता है। अंतरिक्ष में गुरुत्वाकर्षण ना के बराबर होता है, अंतरिक्षयात्री अंतरिक्षयान में तैरते हुए अपने कार्यों को अंजाम देते हैं- ऐसी असंख्य चुनौतियों के बीच एक अंतरिक्षयात्री को अंतरिक्षयान में समय गुजारना होता है। इस कारण से अंतरिक्षयात्रियों को स्वास्थ्य से जुड़ी अनेक समस्याओं के उत्पन्न होने का खतरा होता है। इसलिए अंतरिक्ष यात्री को मानसिक रूप से बेहद मजबूत रहना होता है। लेकिन ऐसी विशेष परिस्थिति जिसमें सुनीता विलियम्स फंसी हुई हैं, अंतरिक्ष प्रवास और भी कठिन हो जाता है। ऐसी स्थिति में यह देखना सुखद है कि सुनीता विलियम्स भावनात्मक रूप से काफी सशक्त हैं और अंतरिक्ष अनुसंधान को लेकर उनके अंदर बेहद उत्साह है। 58 वर्षीय अंतरिक्ष विज्ञानी सुनीता विलियम्स समूचे विश्व के अंतरिक्ष विज्ञानियों, शोधार्थियों, युवा विद्यार्थियों और अंतरिक्ष प्रेमियों के लिए एक प्रेरणा स्रोत हैं। उन्हें यदि अंतरिक्ष योद्धा कहें तो अतिशयोक्ति न होगी।

मनीष

(मनीष मोहन गोरे)

© 2024 राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान, लेखकों के कथनों और मतों के लिए सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान, डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग, नई दिल्ली - 110012 उत्तरदायी नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद दिल्ली न्यायालय द्वारा ही निपटाये जायेंगे।

मूल्य: एक अंक: 75.00 रुपये; एक वर्ष: 750.00 रुपये; दो वर्ष: 1425.00 रुपये; तीन वर्ष: 2025.00 रुपये, विदेशी वार्षिक सदस्यता: 108\$

पृष्ठताछ: 011-25841647, ई-मेल: psmsupport@niscpr.res.in

सम्पादकीय: 011-25841769, 011-25846301, 04-07/370, प्रोडक्शन: 011-25847353, 25846301, 04-07/217, 221

बिक्री एवं विज्ञापन: 011-25841647, EPABX: 011-25846301 Ext. 289, ई-मेल: psmsupport@niscpr.res.in, फ़ैक्स: 011-25847062

ई-मेल: vp@niscpr.res.in; वेबसाइट: https://niscpr.res.in